विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ **दिनांक** -30-06-2020

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -4 नर हो न निराश करो मन को नामक शीर्षक के भावार्थ को समझने का प्रयास करेंगे ।आप सभी ध्यान पूर्वक अध्ययन करेंगे और प्रश्नों के उत्तर देंगे।

पथ -- रास्ता

अवलंबन -- सहारा

स्वत्व -- अस्तित्व

कानन -- जंगल

मान -- आदर सम्मान

गुजित -- गूँजता हुआ

सपना -- कल्पना

अखिलेश्वर -- भगवान

तत्व -- चीजें सार

सुधा -- अमृत

भव -- संसार

गौरव -- सम्मान

मरणोत्तर -- मरने के बाद

प्रशस्त -- प्रशंसा करने के योग्य

भावार्थ -

नर हो न निराश करो मन को कविता में कवि मैथलीशरण गुप्त जी कहते हैं कि मानव का जीवन पाकर कुछ काम करना चाहिए। अपने जीवन को व्यर्थ नहीं होने दो, अपने तन का उपयोग करो और अपना नाम करो। मानव जीवन पाकर मन को निराश मत होने दो।

अपने को संभालो ताकि अच्छा समय यूँही न निकल जाये। अच्छा कार्य कभी निष्फल नहीं होता। जग को एक सपना न समझो, अपना रास्ता स्वयं निकालो। भगवान सहायता करने के लिए हैं। तुम्हारे लिए सब तत्व उपलब्ध हैं, तुम उठकर अमृत पान करो और अमरत्व प्राप्त करो। हमेशा अपने स्वाभिमान का ध्यान रखो, सब कुछ चला जाये पर सम्मान न जाये। कुछ भी हो जाये पर अपना साधन मत छोड़ो। मानव जीवन पाकर मन को निराश मत होने दो।

गृहकार्य

(क) इस कविता में कवि क्या प्रेरणा देना चाह रहा है?

(ख) कवि किस बात को समझने की बात कहता है ?

(ग) कवि इस जग के बारे में क्या कहता है?